



अध्याय- 1

समानता  
Equality



इकाई- 1

भारतीय लोकतंत्र  
में समानता

**NCERT  
Based**

**CLASS - VIIth  
(Polity)**



By : Karan Sir



इकाई - 1, अध्याय- 1

समानता

**Equality**

समानता

On Equality

Liberty  
Fraternity

स्वतंत्रता  
व्यंश  
French  
Revolution  
1789



छोटेलाल  
किसान

Manjit Kaur  
Teacher



मंजीत कौर  
शिक्षिका

Teja Singh  
Trader



तेजा सिंह  
व्यापारी

Girish Rao  
Student



गिरीश राव  
छात्र

Kanta Devi  
Domestic worker



कांता देवी  
घरेलू कामगार



सुजाता कुमारी  
घरेलू कामगार

Sujata Kumari  
Domestic worker

## समानता

भारत एक लोकतंत्रीय देश है। कक्षा 6 की पुस्तक में हमने लोकतंत्रीय सरकार के मुख्य तत्त्वों के बारे में पढ़ा था, जैसे-लोगों की भागीदारी, संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान, समानता और न्याय। 'समानता', लोकतंत्र की मुख्य विशेषता है और इसकी कार्यप्रणाली के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। इस अध्याय में आप समानता के बारे में और अधिक जानेंगे-यह क्या है, लोकतंत्र के लिए यह आवश्यक क्यों हैं, और भारत में सब समान हैं या नहीं। हम कान्ता की कहानी से चर्चा आरंभ करते हैं।

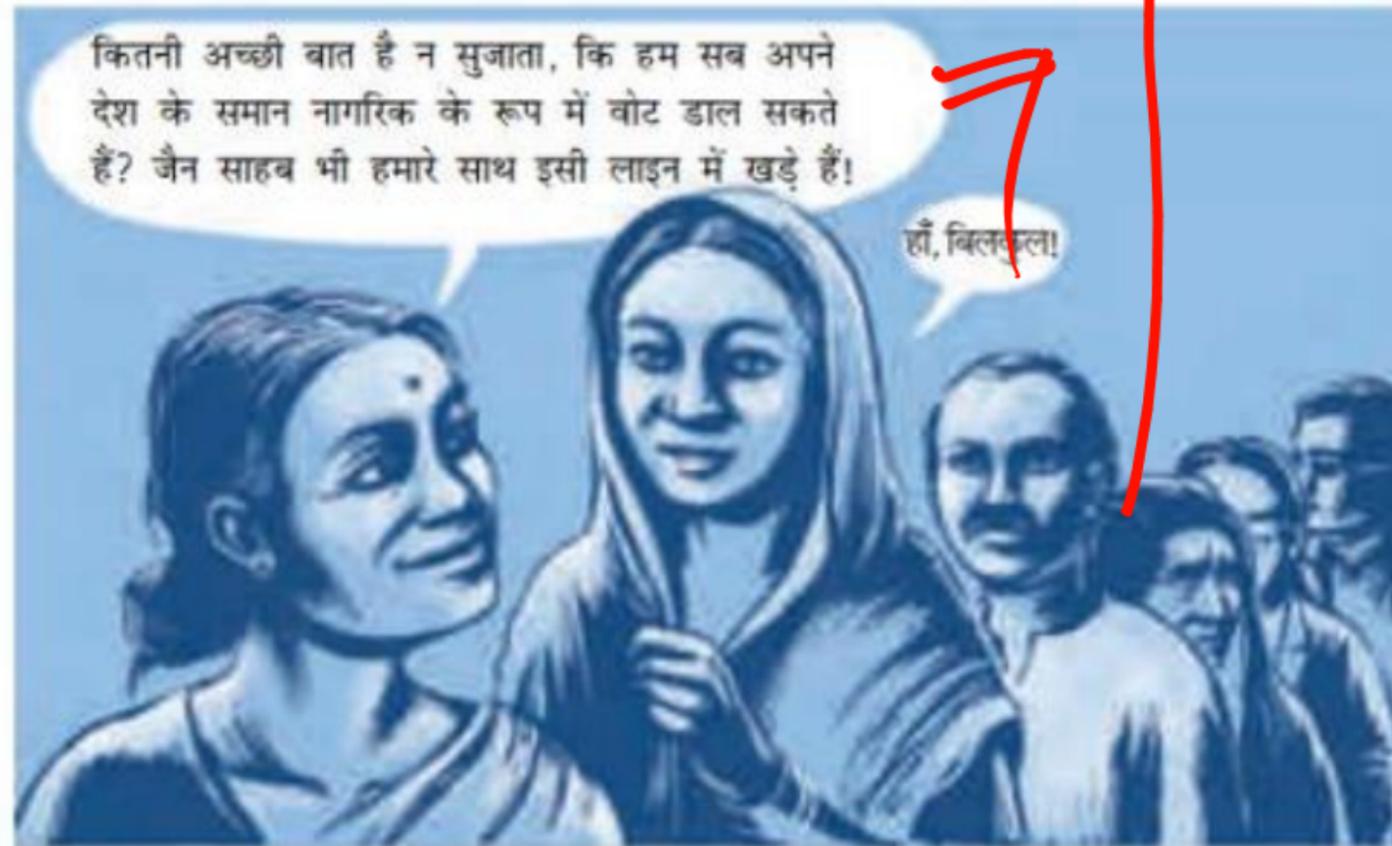
## On Equality

India is a democracy. In the Class VI book, we looked at the key elements of a democratic government.

These include people's participation, the resolution of conflict, and equality and justice.

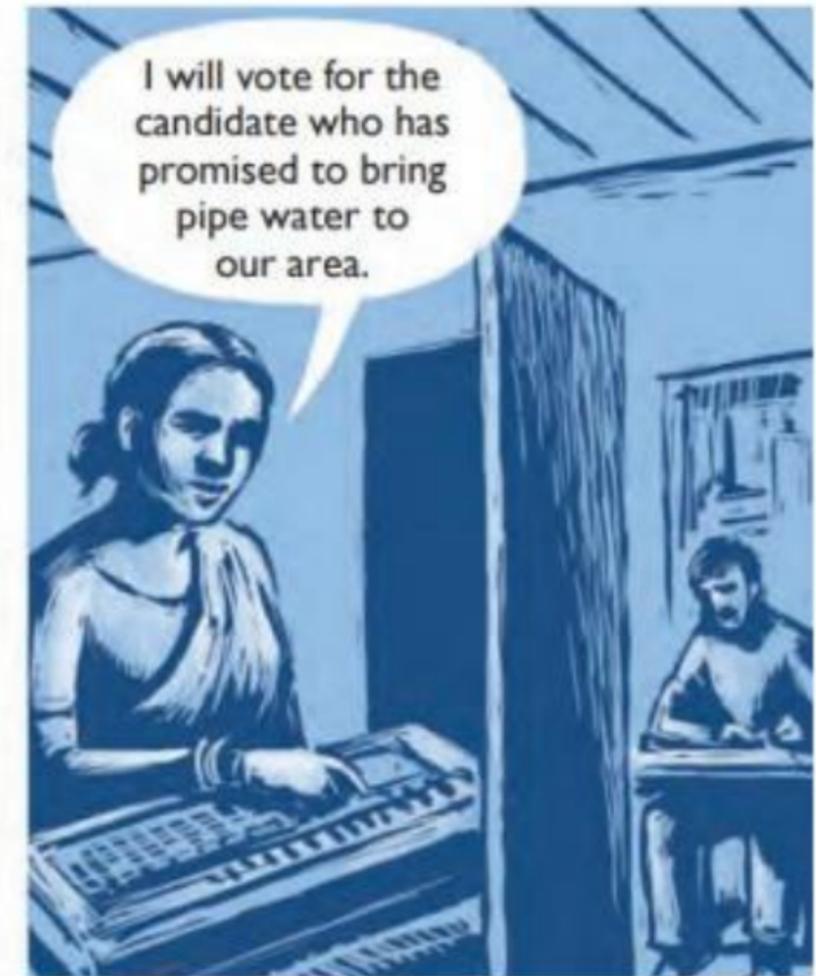
Equality is a key feature of democracy and influences all aspects of its functioning. In this chapter you will read more about equality - what it is, why it is important in a democracy, and whether or not everyone is equal in India. Let's begin by looking at Kanta's story.

चुनाव के दिन कांता और उसकी दोस्त सुजाता वोट डालने की बारी का इंतज़ार कर रही हैं...



On election day, Kanta and her friend Sujata are waiting to cast their votes...







अब्दुल रहमान  
कारीगर

Abdul Rehman  
Artisan



शबनम बानो  
गृहिणी

शबनम बानो  
Housewife



ग्रेसी लैलेंग  
परामर्शदाता

Consultant



आइजैक लैलेंग  
सरकारी अधिकारी

Government officer



रुखसाना मिर्जा  
मीडिया-कर्मी

Media person



योगराज  
बेरोजगार

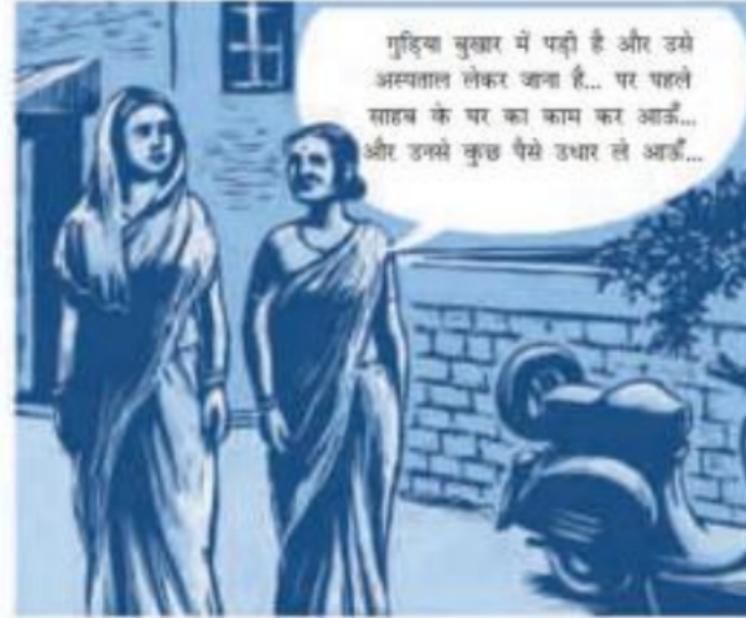
Unemployed



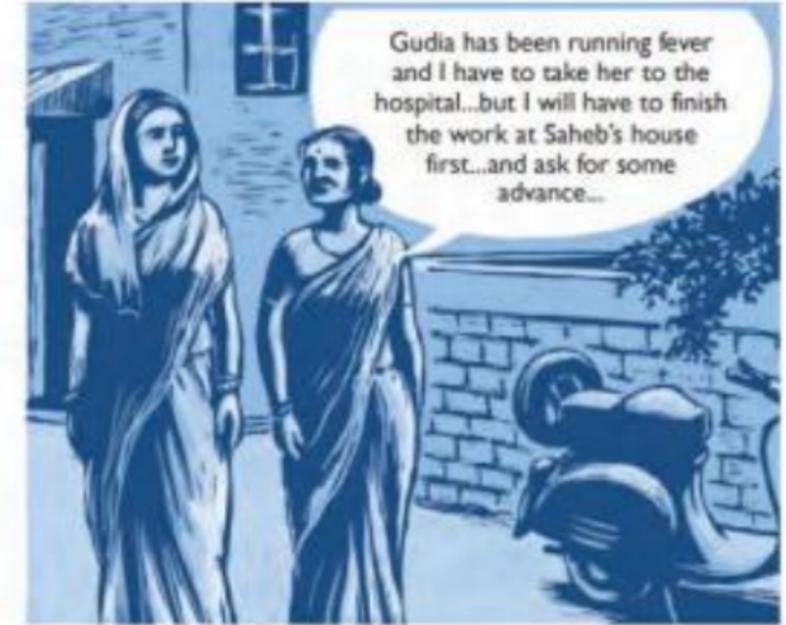
अशोक जैन  
उद्योगपति

Industrialist

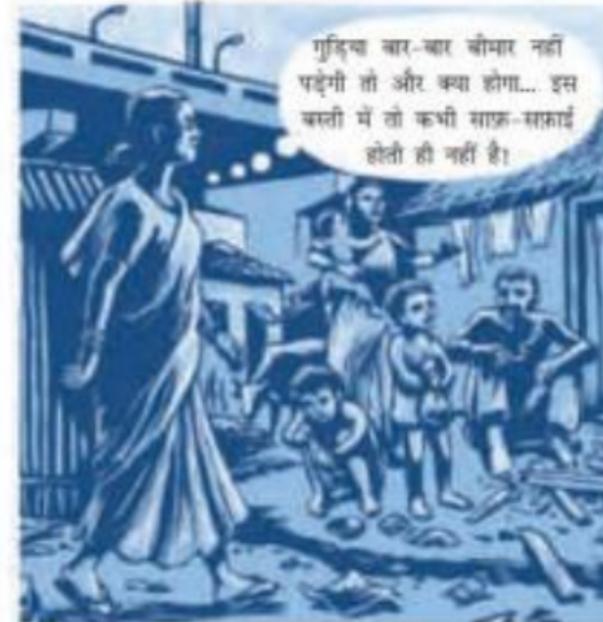
कुछ देर बाद...



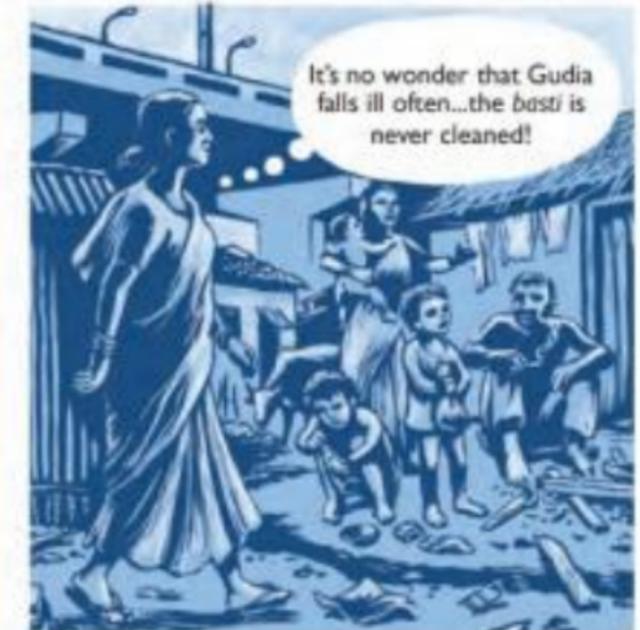
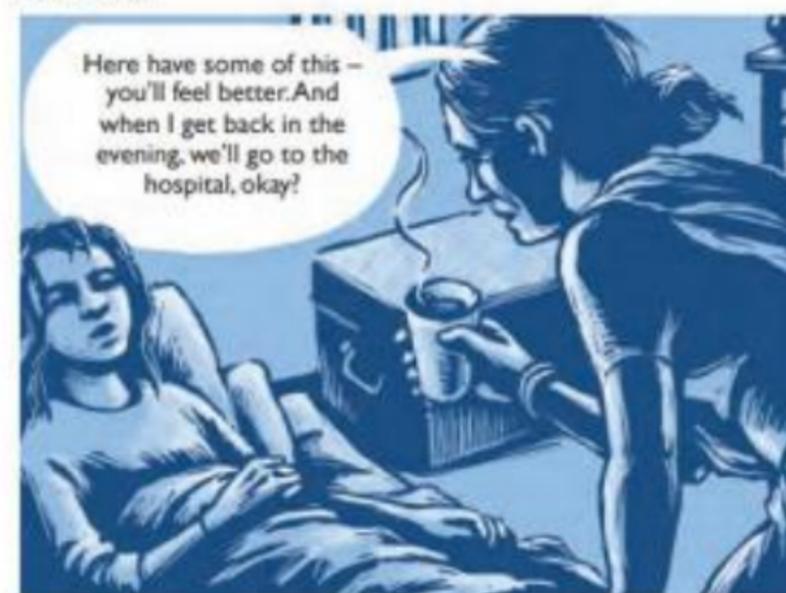
Afterwards...



घर पर...

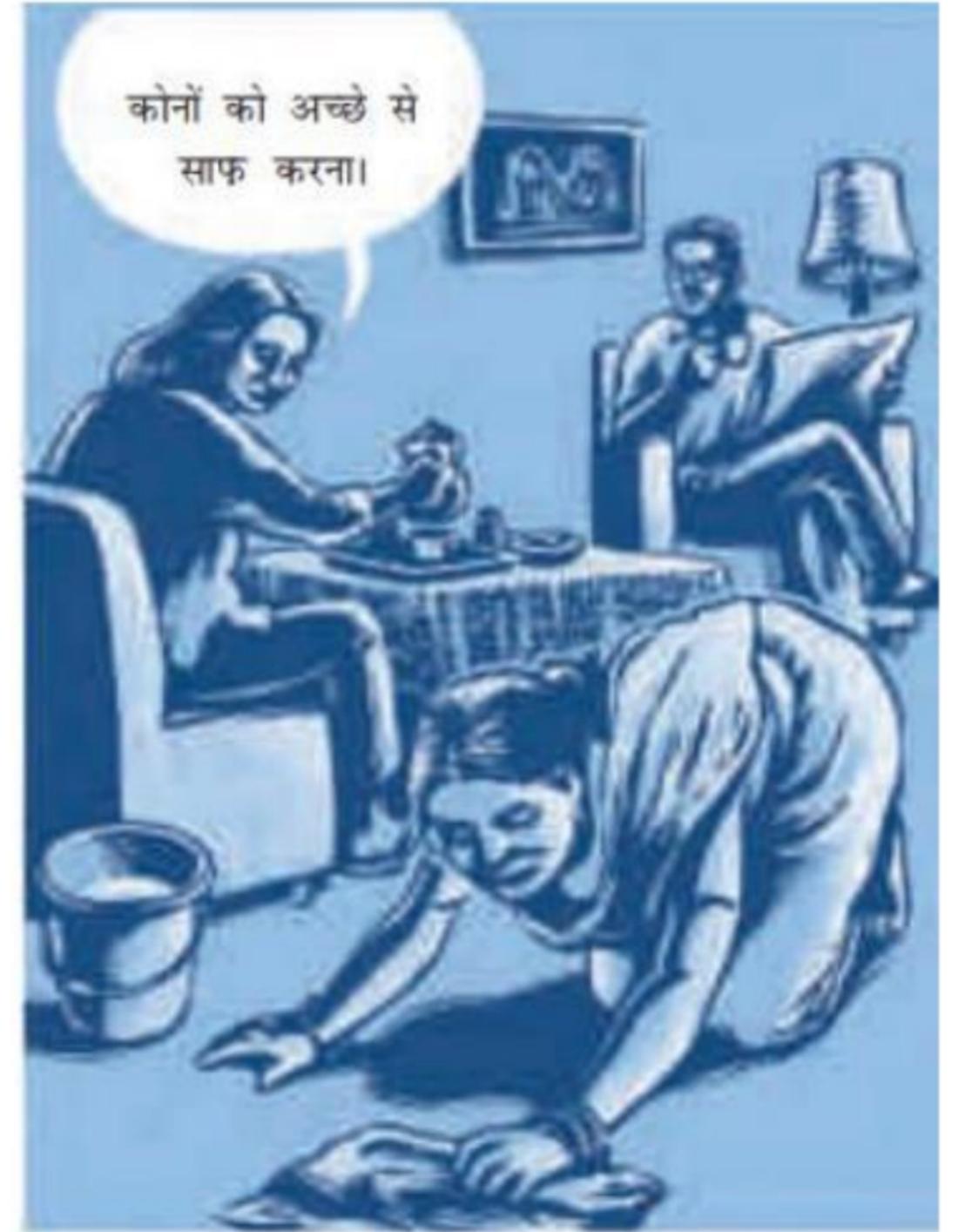


At home...



मताधिकार की समानता

**Equal right to vote**



कहानी का प्रारंभ कांता के वोट देने की लाइन में खड़े होने से होता है। पुनः उन विभिन्न लोगों की ओर देखो, जो उसके साथ लाइन में खड़े हैं। कांता अपने मालिक अशोक जैन को पहचान लेती है और अपने पड़ोसी छोटेलाल को भी। भारत जैसे एक लोकतंत्रीय देश में सब वयस्कों को मत देने का अधिकार है; चाहे उनका धर्म कोई भी हो, शिक्षा का स्तर या जाति कुछ भी हो, वे गरीब हों या अमीर। इसे, जैसा कि आप पिछले वर्ष की पुस्तक में पढ़ चुके हैं, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार कहा जाता है और यह सभी लोकतंत्रों का आवश्यक

Democracy

The story above begins with Kanta standing in line to cast her vote. Look again at the various people who are standing in line with her. Kanta recognises her employer, Ashok Jain and Chotte Lal, her neighbour. In a democratic country, like India, all adults irrespective of what religion they belong to, how much education they have had, what caste they are, or whether they are rich or poor are allowed to vote. This, as you have already read in the Class VI

Vote - वरिष्ठ

पहलू है। 'सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार का विचार', समानता के विचार पर आधारित है, क्योंकि यह घोषित करता है कि देश का हर वयस्क स्त्री/पुरुष चाहे उसका आर्थिक स्तर या जाति कुछ भी क्यों न हो, एक वोट का हकदार है। कान्ता वोट देने के लिए बहुत उत्सुक है और यह देख कर बहुत खुश है कि वह अन्य सबके बराबर है, क्योंकि उन सबके पास भी एक ही वोट है।

book, is called **universal adult franchise** and is an essential aspect of all democracies. The idea of universal adult franchise is based on the idea of equality because it states that every adult in a country, irrespective of their wealth and the communities she/he belongs to, has one vote. Kanta is excited to vote and happy that she is equal to all of the others because each of them has one vote.

adult



उस शाम को...

**That evening...**



परंतु जैसे-जैसे दिन बीतता जाता है, कांता के मन में समानता के वास्तविक अर्थ के बारे में शंका होने लगती है।

But as her day goes on, Kanta becomes less certain about what this equality really means.

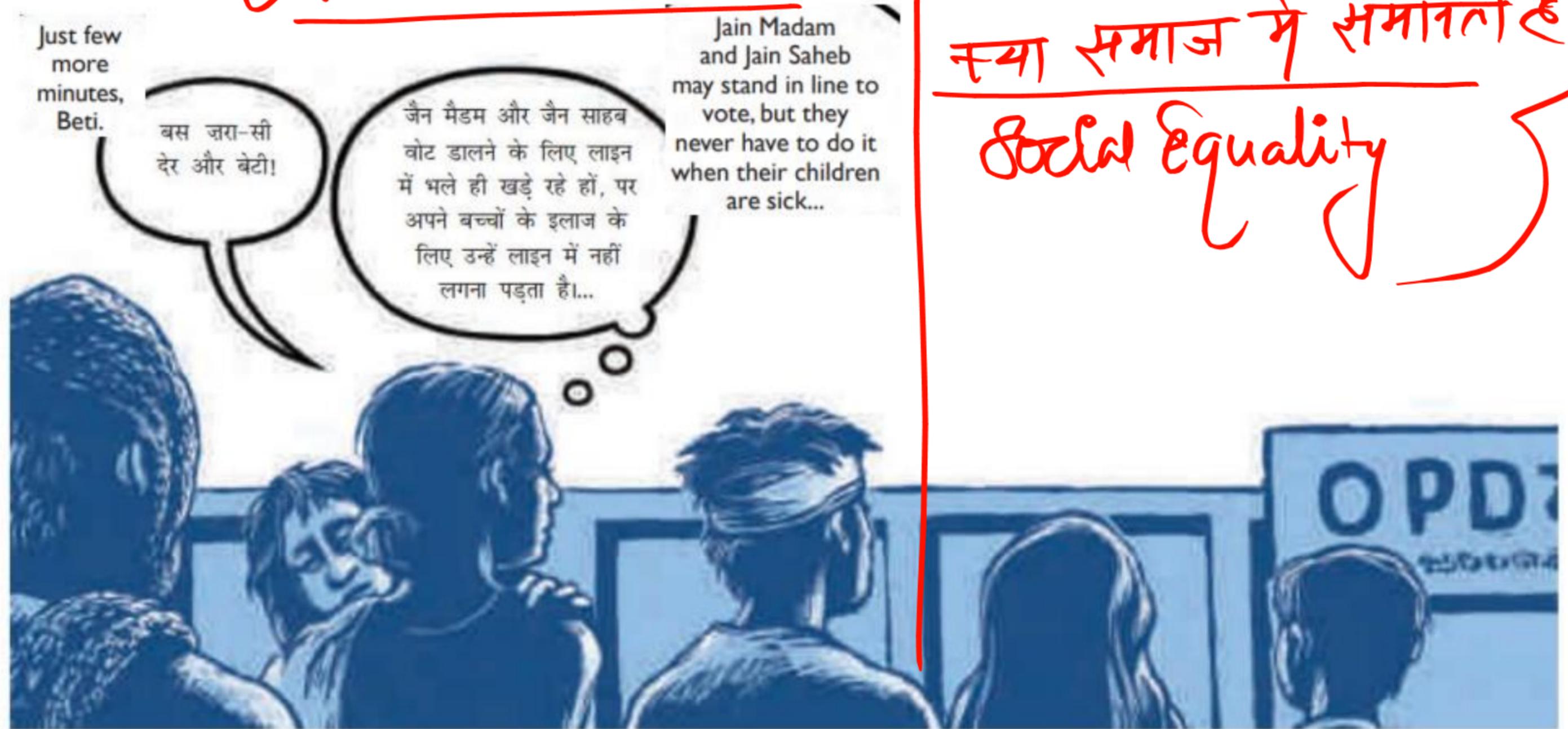
वह क्या बात है, जिसने कांता के मन में शंका पैदा कर दी? आओ, उसके जीवन की दिनचर्या देखें। वह एक झोपड़पट्टी में रहती है और उसके घर के पीछे एक नाला है। उसकी बेटी बीमार है, परंतु वह अपने काम से एक दिन की भी छुट्टी नहीं ले सकती क्योंकि उसे अपने मालिक से बच्ची को डॉक्टर के पास ले जाने के लिए पैसे उधार लेने हैं। घरेलू काम की नौकरी उसे थका देती है और अंततः उसके दिन की समाप्ति फिर लंबी लाइन में खड़े होकर होती है। सरकारी अस्पताल के सामने लगी यह लाइन, उस लाइन से भिन्न है, जिसमें वह सुबह लगी थी, क्योंकि इस लाइन में खड़े अधिकांश लोग गरीब हैं।

आपके विचार से समानता के बारे में शंका करने के लिए कांता के पास क्या पर्याप्त कारण हैं? उपरोक्त कहानी के आधार पर उसके ऐसा सोचने के तीन कारण बताइए ।

What is it that makes Kanta unsure? Let's take a look at a day in her life. She lives in a slum and has a drain behind her house. Her daughter is sick but she cannot take the day off from work because she needs to borrow money from her employers to take her child to the doctor. Her job as a domestic help tires her out, and finally she ends her day by again standing in a long line. This line, in front of the government hospital, is unlike the one in the morning because most of the people standing in it are poor.

Do you think Kanta has enough reason to doubt whether she really is equal? List three reasons from the story above that might make her feel like this.

Political - राजनीतिक समानता



क्या समाज में समानता है  
Social Equality

## अन्य प्रकार की असमानताएँ **Other kinds of equality**

कांता उन बहुत से लोगों में से एक है, जो भारतीय लोकतंत्र में रहते हैं और जिन्हें मताधिकार प्राप्त है, लेकिन जिनका दैनिक जीवन और कार्य करने की स्थितियाँ समानता से बहुत दूर हैं। निर्धन होने के अतिरिक्त भारत में लोगों को अन्य अनेक कारणों से भी असमानता का सामना करना पड़ता है। इसका आशय हम निम्नलिखित दो कहानियों को पढ़कर समझेंगे। ये दोनों ही वास्तविक घटनाओं पर आधारित हैं और भारत में होने वाली विभिन्न प्रकार की असमानताओं पर प्रकाश डालती हैं।

Kanta is one of many people who live in democratic India and who have the right to vote but whose daily living and working conditions are far from equal. Apart from being poor, people in India experience inequality in different ways. Let us see what this means by reading the two stories given below. Each of these is based on real incidents in people's lives and reflects the different kinds of inequalities that exist in India.

✓ कुर्मी क्षत्रिय 26/5-4 बी.एस.सी  
(माइक्रोबायो) एम.एस.सी (बायोटेक)  
बी.एड., असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राइवेट कॉलेज  
हेतु सजातीय वर चाहिए।  
ब्राह्मण जीजोदिया बुंदेलखंडी ब्राह्मण, ध्रुव कौशल  
गोत्र 30/5.00 गौर वर्ण, एम.ए. तीन विषयों में एवं  
अन्य डिप्लोमा कोर्स कन्या हेतु वर चाहिए, सर्व  
ब्राह्मण मान्य।

तोमर राजपूत 30/5-9" मैकेनिकल इंजीनियर सुजलान  
(पुणे) हेतु सेवारत, उच्च तकनीकी अर्हता प्राप्त राजपूत  
कन्या चाहिए

23/5'3" स्लिम गोरी बी.ई. कम्प्यूटर साइंस, छत्तीसगढ़ी  
अग्रवाल कन्या के लिए स्वजातीय मैचिंग वर चाहिए

✓ ALLIANCE invited for  
32/MMS/5'4"/fair/b'ful  
girl  
working in IT Co. Mumbai  
from BE / MBA boy working  
in Mumbai/Abroad from IT  
Industry Caste no bar, SC/  
ST excuse. Send BHP (must)

PROF Qlfd B'ful tall girl 4  
Gupta Boy 28/6' CA Working  
MNC TXS USA \$ 80k.

TAMIL BRAHMIN Iyengar groom,  
1981 born, Naithruvakashyapa Goth-  
ram, Swathi Star, 180cms, tall, fair

Circle the reference to caste in the  
matrimonial advertisements given  
above.

भारत में सामान्यतः प्रचलित असमानताओं में से एक है- जातिगत व्यवस्था। यदि आप ग्रामीण भारत में रहते हैं, तो जातिगत पहचान का अनुभव शायद बहुत छोटी आयु में ही हो जाता है। यदि आप भारत के शहरी क्षेत्र में रहते हैं, तो शायद यह सोचेंगे कि लोग अब जात-पात में विश्वास नहीं करते। परंतु ज़रा एक प्रमुख समाचारपत्र के वैवाहिक विज्ञापन के कॉलम को देखिए, तो आप पाएँगे कि उच्च शिक्षा प्राप्त शहरी भारतीय के दिमाग में भी जाति कितनी महत्वपूर्ण है।

①

जाति

One of the more common forms of inequality in India is the caste system. If you live in rural India your caste identity is something that you probably learned or experienced very young. If you live in urban India some of you might think that people no longer believe in caste. But just look at these matrimonials shown from a leading English newspaper and you will see how important the issue of caste continues to be in the minds of highly educated urban Indians.

आइए, अब एक कहानी स्कूल जाने वाले एक दलित बच्चे के अनुभवों के बारे में पढ़ें। दलितों के बारे में आप पहले ही पिछले वर्ष की पुस्तक में पढ़ चुके हैं। 'दलित' एक ऐसा शब्द है, जो निचली कही जानी वाली जाति के लोग स्वयं को संबोधित करने के लिए प्रयोग में लाते हैं। 'दलित' का अर्थ होता है- कुचला हुआ या रूटा हुआ और इस शब्द का इस्तेमाल करके दलित यह संकेत करते हैं कि पहले भी उनके साथ बहुत भेदभाव होता था और आज भी हो रहा है।

Now let us read a story about the experiences of a *Dalit* child attending school. You have already read about Dalits in the Class VI book. *Dalit* is a term that the so-called lower castes use to address themselves. *Dalit* means 'broken' and by using this word, lower castes are pointing to how they were, and continue to be, seriously discriminated against.

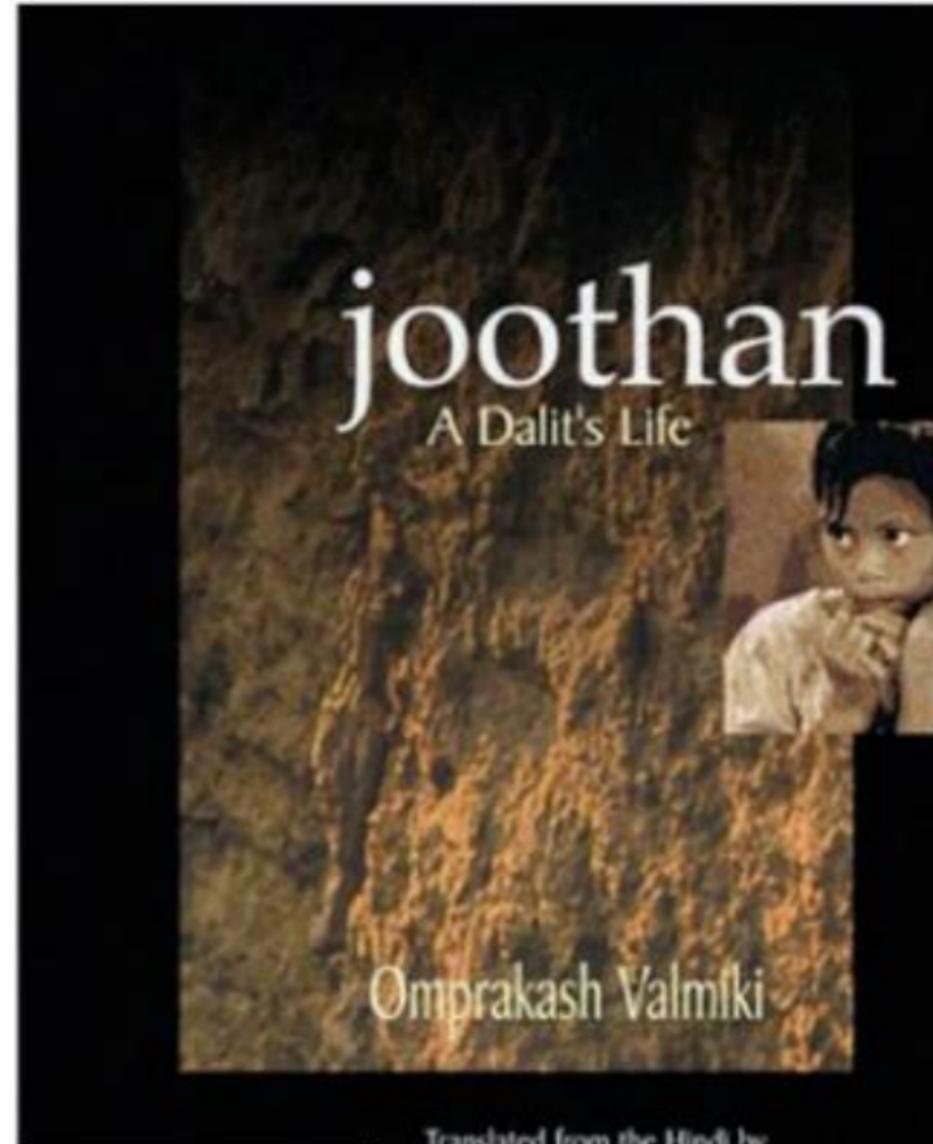
↓ Dak ↓

ओमप्रकाश वाल्मीकि (1950-2013) एक प्रसिद्ध दलित लेखक हैं। अपनी आत्मकथा जूथन में वे लिखते हैं- “स्कूल में दूसरों से दूर बैठना पड़ता था, वह भाँ जमीन पर अपने बैठने की जगह तक आते-आते चटाई छोटी पड़ जाती थी। कभी-कभी तो एकदम पीछे दरवाजे के पास बैठना पड़ता था जहाँ से बोर्ड पर लिखे अक्षर धुँध ले दिखते थे। कभी-कभी बिना कारण पिटाई भी कर देते थे।” जब वे कक्षा चार में थे, प्रधानाध्यापक ने ओमप्रकाश से स्कूल और खेल के मैदान में झाड़ू लगाने को कहा। वे लिखते हैं- “लंबा-चौड़ा मैदान मेरे वजूद से कई गुना बड़ा था, जिसे साफ करने से मेरी कमर दर्द

Omprakash Valmiki is a famous *Dalit* writer. In his autobiography, *Joothan*, he writes, “I had to sit away from the others in the class, and that too on the floor. The mat ran out before reaching the spot I sat on. Sometimes I would have to sit way behind everybody, right near the door...sometimes they would beat me without any reason.” When he was in Class IV, the headmaster asked Omprakash to sweep the school and the playground. He writes, “The playground was way larger than my small physique could handle and in cleaning it, my back began to ache. My face was covered with dust. Dust had gone

के विचार से ओमप्रकाश वाल्मीकि  
साथ उसके शिक्षक और सहपाठियों  
समानता का व्यवहार क्यों किया  
अपने आपको ओमप्रकाश  
मीकि की जगह रखते हुए चार  
तयों लिखिए कि उक्त स्थिति में  
कैसा अनुभव करते?

Why do you think Omprakash  
Valmiki was being treated unequally  
by his teacher and his classmates?  
Imagine yourself as Omprakash  
Valmiki and write four lines about  
how you would feel if you were in  
the same situation as him.



Translated from the Hindi by  
Arun Prabha Mukherjee

Cover of Omprakash Valmiki's book,  
Joothan, which talks about his  
experiences of growing up as a Dalit boy.



ओमप्रकाश वाल्मीकि की किताब जूठन का  
मुखपृष्ठ, जिसमें उन्होंने एक दलित बालक के रूप  
में बड़े होने के अनुभवों को प्रस्तुत किया है।

करने लगी थी। धूल से चेहरा, सिर अँट गया था। मुँह के भीतर धूल घुस गई थी। मेरी कक्षा में बाकी बच्चे पढ़ रहे थे और मैं झाड़ू लगा रहा था। हेडमास्टर अपने कमरे में बैठे थे लेकिन निगाह मुझ पर टिकी थी। पानी पीने तक की इजाजत नहीं थी। पूरा दिन मैं झाड़ू लगाता रहा।... स्कूल के कमरों की खिड़की, दरवाजों से मास्टर्स और लड़कों की आँखें छिपकर तमाशा देख रही थीं।” ओमप्रकाश से अगले दो दिनों तक स्कूल और खेल के मैदान में झाड़ू लगवाई जाती रही और यह क्रम तभी रुका, जब उधर से गुजरते हुए उसके पिता ने अपने बेटे को झाड़ू लगाते देखा। उन्होंने शिक्षकों का साहसपूर्वक सामना किया और ओमप्रकाश का हाथ पकड़ कर स्कूल से बाहर जाते हुए ऊँचे स्वर में सबको सुनाते हुए कहा... “मास्टर हो...इसलिए जा रहा हूँ...पर इतना याद रखिए मास्टर... यो...यहीं पढ़ेगा...इसी मदरसे में। और यो ही नहीं, इसके बाद और भी आवेंगे पढ़ने कू।”

inside my mouth. The other children in my class were studying and I was sweeping. Headmaster was sitting in his room and watching me. I was not even allowed to get a drink of water. I swept the whole day,...From the doors and windows of the school rooms, the eyes of the teachers and the boys saw this spectacle.” Omprakash was made to sweep the school and the playground for the next couple of days and this only came to an end when his father, who happened to be passing by, saw his son sweeping. He confronted the teachers and then walking away from the school holding Omprakash's hand, he said loudly for all of them to hear, “You are a teacher...So I am leaving now. But remember this much Master...(He) will study right here...in this school. And not just him, but there will be more coming after him.”

आपके विचार से अंसारी दंपति के साथ असमानता का व्यवहार क्यों किया जा रहा था? यदि आप अंसारी दंपति की जगह होते और आपको रहने के लिए इस कारण जगह न मिलती क्योंकि कुछ पड़ोसी आपके धर्म के कारण आपके पास नहीं रहना चाहते, तो आप क्या करते?

Why do you think the Ansaris were being treated unequally? What would you do if you were in the Ansaris' position and could not find a place to live because some people did not want to live next to you because of the religion you practice?

दूसरी कहानी एक ऐसी घटना पर आधारित है, जो भारत के एक बड़े शहर में घटी और देश के अधिकांश भागों में ऐसा होना एक सामान्य बात है। यह कहानी श्री और श्रीमती अंसारी की है जो शहर में किराए पर एक मकान लेना चाहते थे। वे पैसे वाले थे, इसलिए किराए की कोई समस्या नहीं थी। वे मकान ढूँढ़ने में मदद लेने एक प्रॉपर्टी डीलर के पास गए। डीलर ने उन्हें बताया कि वह कई खाली मकानों के बारे में जानता है, जो किराए पर मिल सकते हैं। वे पहला मकान देखने गए। अंसारी दंपति को मकान बहुत अच्छा लगा और उन्होंने मकान लेने का निर्णय कर लिया। फिर जब मकान-मालकिन ने उनके नाम सुने, तो वे बहाने बनाने लगीं कि वो मांसाहारी लोगों को मकान नहीं दे सकतीं, क्योंकि उस बिल्डिंग में

The second story is based on an incident that took place in one of India's larger cities and is common practice in most parts of the country. It is a story about Mr and Mrs Ansari who were looking to rent an apartment in the city. They had the money and so paying the rent was no problem. They went to a property dealer for help to find a place. The dealer informed them that he knew about quite a few apartments that were available for rent. They visited the first apartment and the Ansaris liked it very much and decided to take it. However, when the landlady found out their names, she made an excuse about how she could not rent the house to someone who

कोई-भी मांसाहारी व्यक्ति निवास नहीं करता। प्रॉपर्टी डीलर और अंसारी दंपति, दोनों ही यह सुनकर आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि पड़ोस से मछली पकाने की गंध आ रही थी। उनके सामने उन दूसरे और तीसरे मकानों में भी जो उन्हें पसंद आए थे, यही बहाना दुहराया गया। अंत में प्रॉपर्टी डीलर ने सुझाव दिया कि क्या वे अपना नाम बदल कर श्री और श्रीमती कुमार रखना चाहेंगे। अंसारी दंपति ऐसा करने के इच्छुक नहीं थे, इसलिए उन्होंने कुछ और मकान देखने का निश्चय किया। अंत में लगभग एक महीने ढूँढ़ने के बाद उन्हें एक मकान-मालकिन मिलीं, जो उन्हें किराए पर मकान देने को तैयार थीं।

ate meat because the building did not have any non-vegetarian residents. Both the Ansaris and the property dealer were surprised to hear this because they could smell fish being cooked in the neighbour's house. The same excuse was repeated in the second and the third apartments. Finally, the property dealer told them that they might want to change their names and call themselves Mr and Mrs Kumar. The Ansaris were reluctant to do this and decided to look some more. In the end, it took a whole month of looking at apartments before they found a landlady who was willing to give them a place on rent.

## मानवीय गरिमा का मूल्य

### Recognising dignity

अब तक आप समझ गये होंगे कि प्रायः कुछ लोगों के साथ असमानता का व्यवहार बस इस कारण होता है कि उनका जन्म किस जाति, लिंग या धर्म में हुआ और वे उच्च वर्ग के हैं या मध्यम या निम्न वर्ग के। ओमप्रकाश वाल्मीकि और अंसारी परिवार के साथ असमानता का व्यवहार जातिगत और धर्मगत कारणों से हुआ।

जब लोगों के साथ असमानता का व्यवहार होता है, तो उनके सम्मान को ठेस पहुँचती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि तथा अंसारी दंपति के साथ किए गए व्यवहार के कारण उनकी गरिमा को ठेस पहुँची। ओमप्रकाश वाल्मीकि को उनकी जाति के कारण स्कूल में झाड़ू लगवाकर शिक्षकों और छात्रों ने उनके सम्मान को बुरी तरह आहत किया और उन्हें यह महसूस कराया कि वे विद्यालय के अन्य छात्रों के समान नहीं, उनसे कमतर हैं। बच्चा होने के कारण ओमप्रकाश वाल्मीकि स्वयं इस बारे में अधिक कुछ नहीं कर सके। किंतु जब

You have understood by now that the caste we are born into, the religion we practice, the class background we come from, whether we are male or female – these are often the things that determine why some people are treated unequally. Omprakash Valmiki and the Ansaris are being treated unequally on the basis of differences of caste and religion.

When persons are treated unequally, their **dignity** is violated. The dignity of both Omprakash Valmiki and the Ansaris was violated because of the way in which they were treated. By picking on him and making him sweep the school, because of his caste, Omprakash Valmiki's schoolmates and teachers hurt his dignity badly and made him feel as if he was less than equal to all other students in the school. Being a child, Omprakash Valmiki could do very little about

उनके पिता ने अपने बेटे को झाड़ू लगाते देखा, तो उन्हें इस असमान व्यवहार पर क्रोध आया और उन्होंने शिक्षकों के समक्ष विरोध प्रकट किया। जब लोगों ने अंसारी दंपति को अपना मकान किराए पर देने से इंकार कर दिया, तब उनके सम्मान को भी चोट पहुँची। फिर जब प्रॉपर्टी डीलर ने उन्हें नाम बदलने का सुझाव दिया, तब उनके आत्मसम्मान ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया और उन्होंने उस सुझाव को ठुकरा दिया।

ओमप्रकाश और अंसारी दंपति के साथ ऐसा व्यवहार नहीं होना चाहिए था। वे उसी सम्मान और उसी गरिमा के हकदार थे, जो अन्य किसी व्यक्ति को मिलती है।

the situation that he was in. It was his father who, on seeing his son sweep, felt angry by this unequal treatment and confronted the teachers. The Ansaris' dignity was also hurt when persons refused to lease their apartments to them. However, when the property dealer suggested that they change their name, it was their dignity or self-respect that made them refuse this suggestion.

Omprakash and the Ansaris do not deserve to be treated like this. They deserve the same respect and dignity as anyone else.

यदि आप अंसारी परिवार के एक सदस्य होते, तो प्रॉपर्टी डीलर के नाम बदलने के सुझाव का उत्तर किस प्रकार देते?

If you were one of the Ansaris how would you have responded to the suggestion that you change your name?

क्या आपको अपने जीवन की कोई ऐसी घटना याद है, जब आपकी गरिमा को चोट पहुँची हो? आपको उस समय कैसा महसूस हुआ था?

Can you think of an incident in your life in which your dignity was violated? How did this make you feel?



दीवार



*In the 1975 film, Deewar, a boy who works as a shoeshine refuses to pick up a coin thrown at him. He feels that there is dignity in the work that he does and insists that his fee be given respectfully.*



1975 में बनी दीवार फिल्म में जूते पॉलिश करने वाला एक लड़का फेंक कर दिए गए पैसे को उठाने से इंकार कर देता है। वह मानता है कि उसके काम की भी गरिमा है और उसे उसका भुगतान आदर के साथ किया जाना चाहिए।

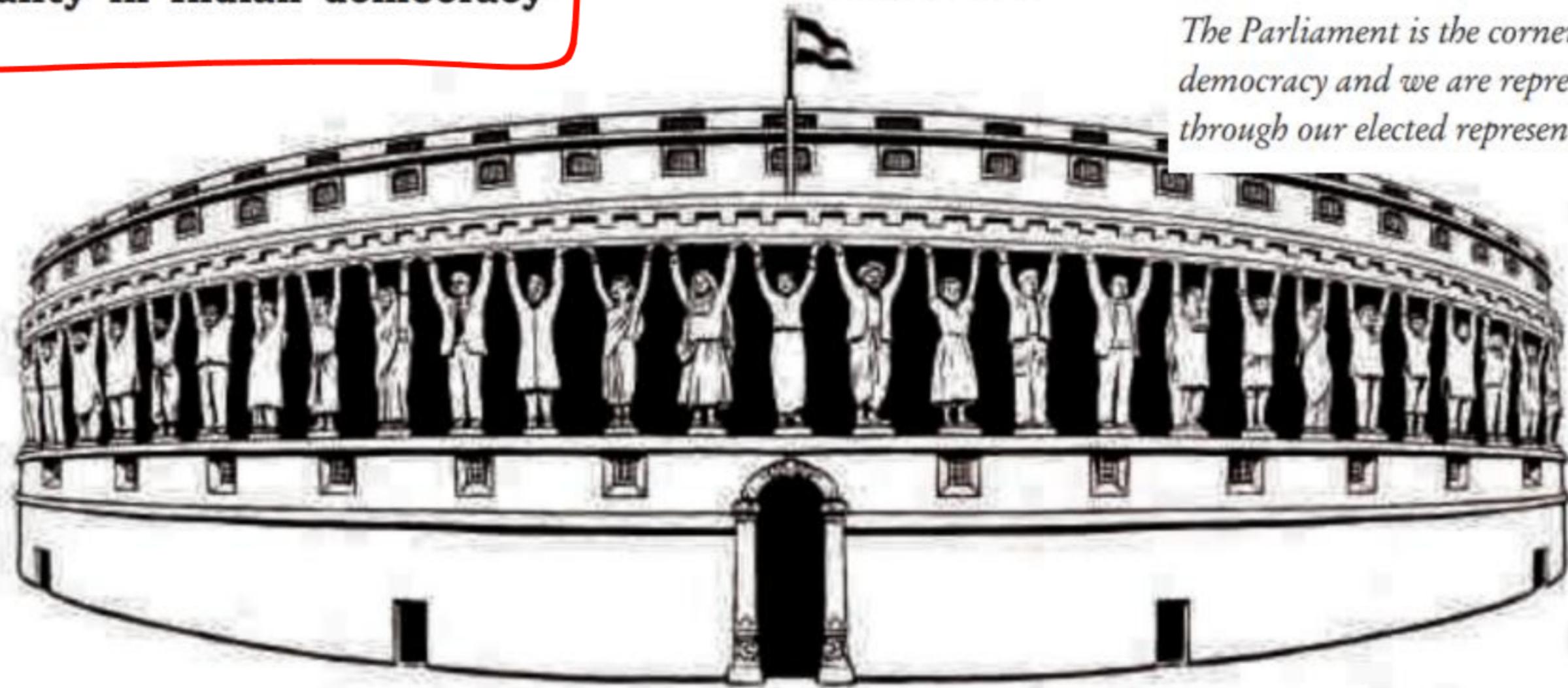
भारतीय लोकतंत्र में समानता

**Equality in Indian democracy**

Chapter

संसद हमारे लोकतंत्र का आधार स्तंभ है और हम अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से उसमें प्रतिनिधित्व पाते हैं।

*The Parliament is the cornerstone of our democracy and we are represented in it through our elected representatives.*



⑩ ⇒ Political Equality -  
राजनीतिक समानता

Universal Adult Franchise

सार्वभौमिक, प्रकृत मतदाताधिकार

Adult - value = बराबर  
मत का मूल्य Equal

[Social Equality]  
सामाजिक समानता

यही No

Society

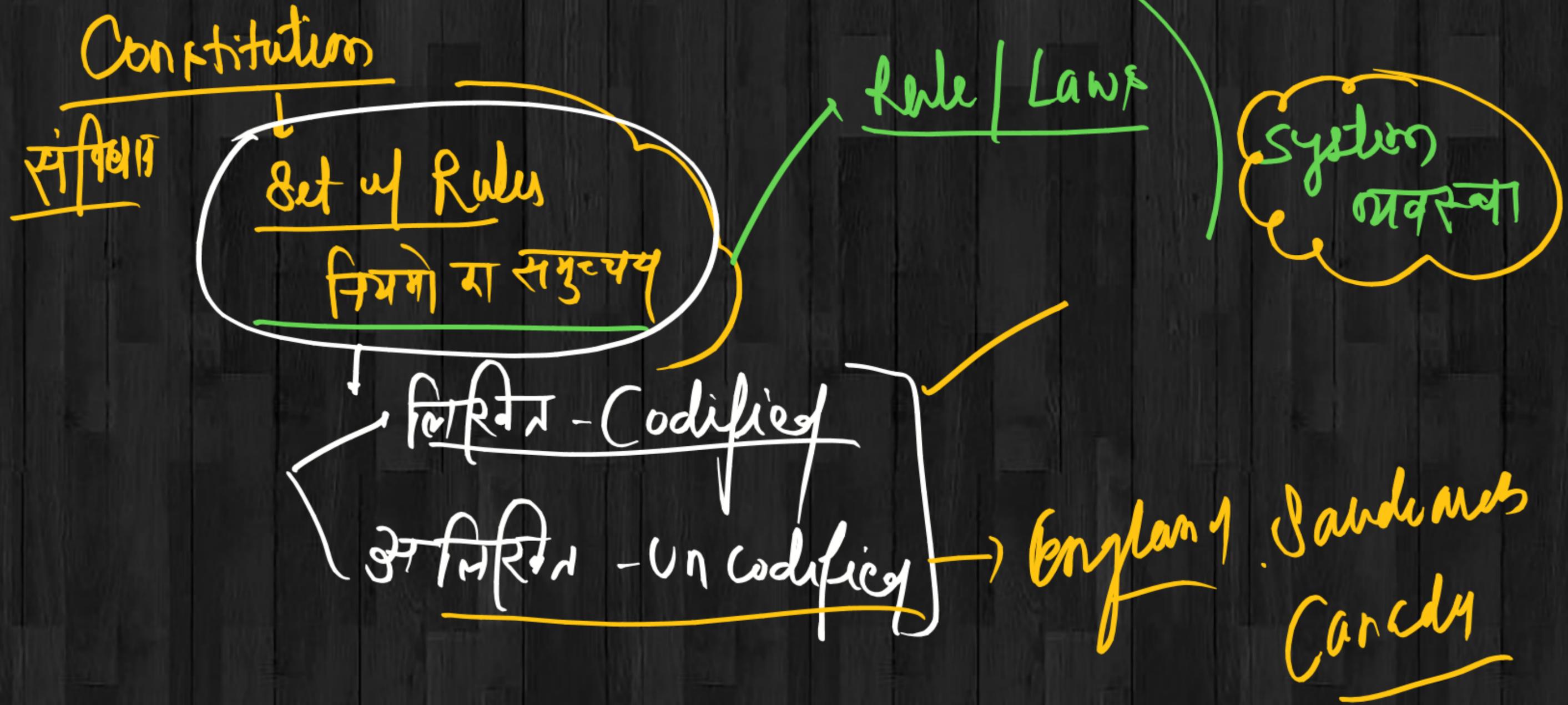
जाति Caste

आर्थिक (Economic) Dignity → (आर्थिक प्रभावित)

भारतीय **संविधान** सब व्यक्तियों को समान मानता है। इसका अर्थ है कि देश के व्यक्ति चाहे वे पुरुष हों या स्त्री, किसी भी जाति, धर्म, शैक्षिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंध रखते हों, वे सब समान माने जाएँगे। लेकिन इसके बाद भी हम यह नहीं कह सकते कि असमानता खत्म हो गई है। यह खत्म नहीं हुई है, लेकिन फिर भी

कम-से-कम भारतीय संविधान में सब व्यक्तियों की समानता के सिद्धांत को मान्य किया गया है। जहाँ पहले भेदभाव और दुर्यवहार से लोगों की रक्षा करने के लिए कोई कानून नहीं था, अब अनेक कानून लोगों के सम्मान तथा उनके साथ समानता के व्यवहार को सुनिश्चित करने के लिए मौजूद हैं।

The Indian **Constitution** recognises every person as equal. This means that every individual in the country, including male and female persons from all castes, religions, tribes, educational and economic backgrounds are recognised as equal. This is not to say that inequality ceases to exist. It doesn't. But at least, in democratic India, the principle of the equality of all persons is recognised. While earlier no law existed to protect people from discrimination and ill-treatment, now there are several that work to see that people are treated with dignity and as equals.





सतत विकास लक्ष्य 2: भूखमरी समाप्त करना  
[www.in.undp.org](http://www.in.undp.org)

समानता को स्थापित करने के लिए संविधान में जो प्रावधान हैं, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं - प्रथम, कानून की दृष्टि में हर व्यक्ति समान है। इसका तात्पर्य यह है कि हर व्यक्ति को देश के राष्ट्रपति से लेकर कांता जैसी घरेलू काम की नौकरी करने वाली महिला तक, सभी को एक ही जैसे कानून का पालन करना है। दूसरा, किसी भी व्यक्ति के साथ उसके धर्म, जाति, वंश, जन्मस्थान और उसके स्त्री या पुरुष होने के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता। तीसरा, हर व्यक्ति सार्वजनिक स्थानों पर जा सकता है, जिनमें खेल के मैदान, होटल, दुकानें और बाजार आदि सम्मिलित हैं। सब लोग सार्वजनिक कुँओं, सड़कों और नहाने के घाटों का उपयोग कर सकते हैं। चौथा, अस्पृश्यता का उन्मूलन कर दिया गया है।

शासन ने संविधान द्वारा मान्य किए गए समानता के अधिकार को दो तरह से लागू किया है - पहला, कानून के द्वारा और दूसरा, सरकार की योजनाओं व कार्यक्रमों द्वारा सुविधाहीन समाजों की मदद

This recognition of equality includes some of the following provisions in the Constitution: first that every person is equal before the law. What this means is that every person, from the President of the country to Kanta, a domestic worker, has to obey the same laws. Second, no person can be discriminated against on the basis of their religion, race, caste, place of birth or whether they are female or male. Third, every person has access to all public places including playgrounds, hotels, shops and markets. All persons can use publicly available wells, roads and bathing ghats. Fourth, untouchability has been abolished.

# 14-18} समानता का प्रावधान - Provision of Equality

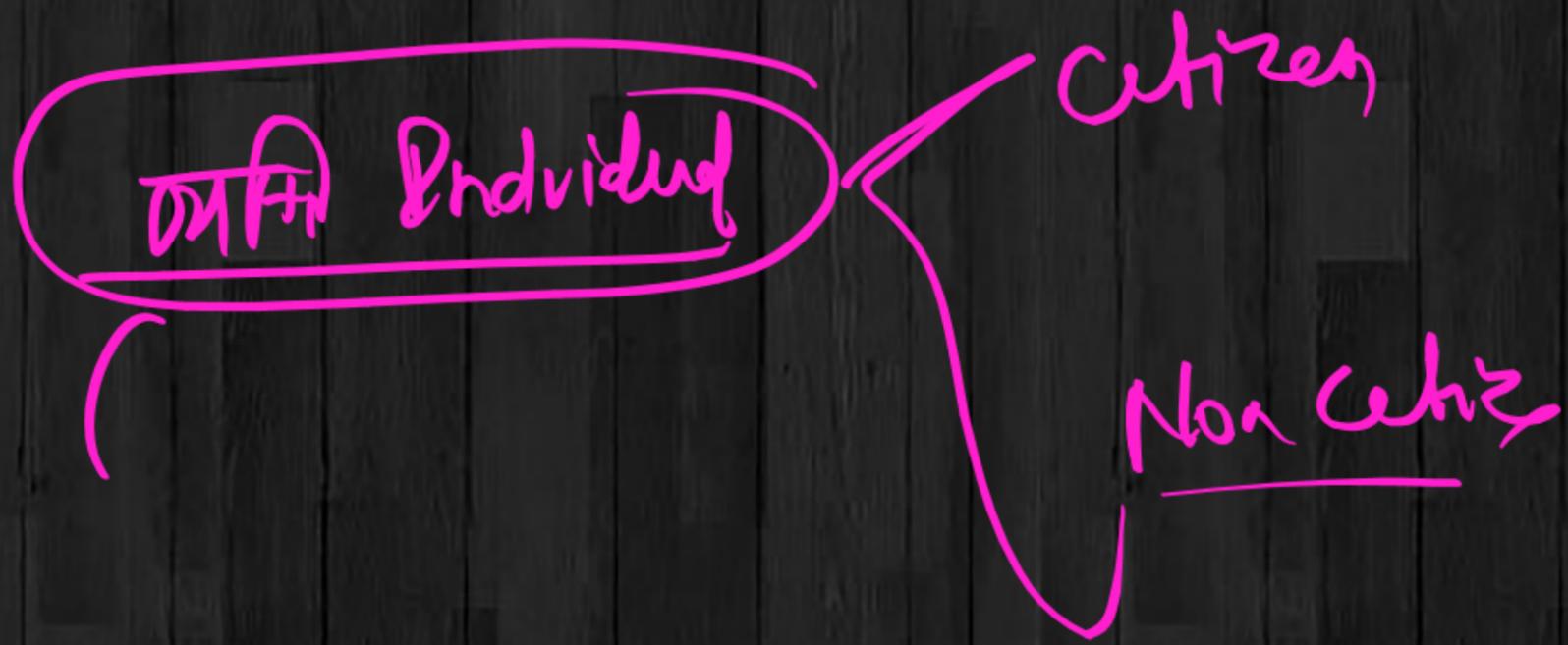
14 = Equality before Law - कारण के समझ समानता

15} ⇒ भारत में किसी भी राष्ट्रिय

Citizen

- जाति - Caste
- धर्म - Religion
- लिंग - Gender
- जन्मस्थान - place of birth
- मूलवंश - Race

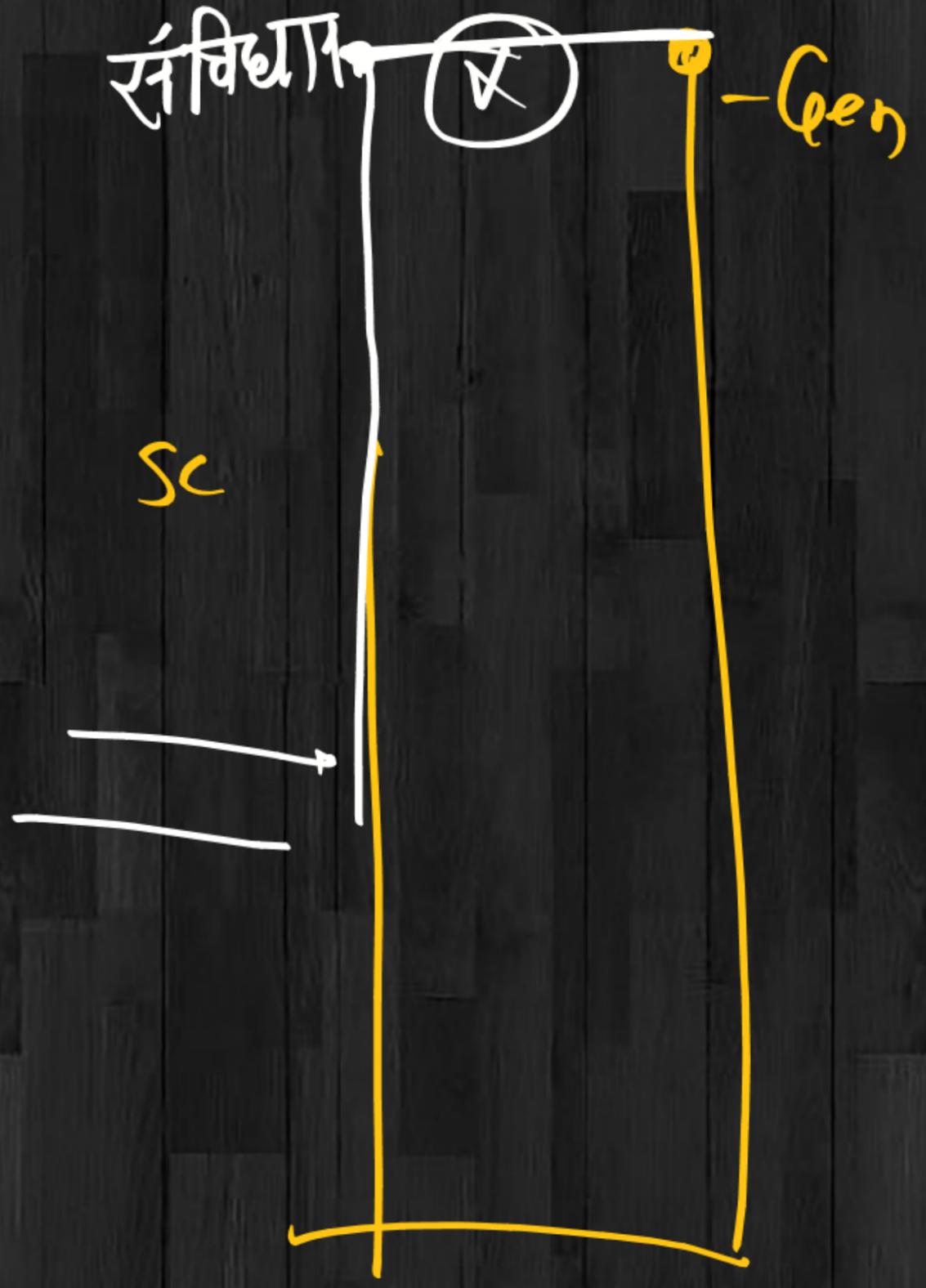
16) Public Employment . सर्वजनिक रोजगार



करके। भारत में ऐसे अनेक कानून हैं, जो व्यक्ति के समान व्यवहार प्राप्त करने के अधिकार की रक्षा करते हैं। कानून के साथ-साथ सरकार ने उन समुदायों जिनके साथ सैकड़ों वर्षों तक असमानता का व्यवहार हुआ है, उनका जीवन सुधारने के लिए अनेक कार्यक्रम और योजनाएँ लागू की हैं। ये योजनाएँ यह सुनिश्चित करने के लिए चलाई गई हैं कि जिन लोगों को अतीत में अवसर नहीं मिले, अब उन्हें अधिक अवसर प्राप्त हों।

Reservations  
अति

The two ways in which the government has tried to implement the equality that is guaranteed in the Constitution is first through laws and second through government programmes or schemes to help disadvantaged communities. There are several laws in India that protect every person's right to be treated equally. In addition to laws, the government has also



Equality

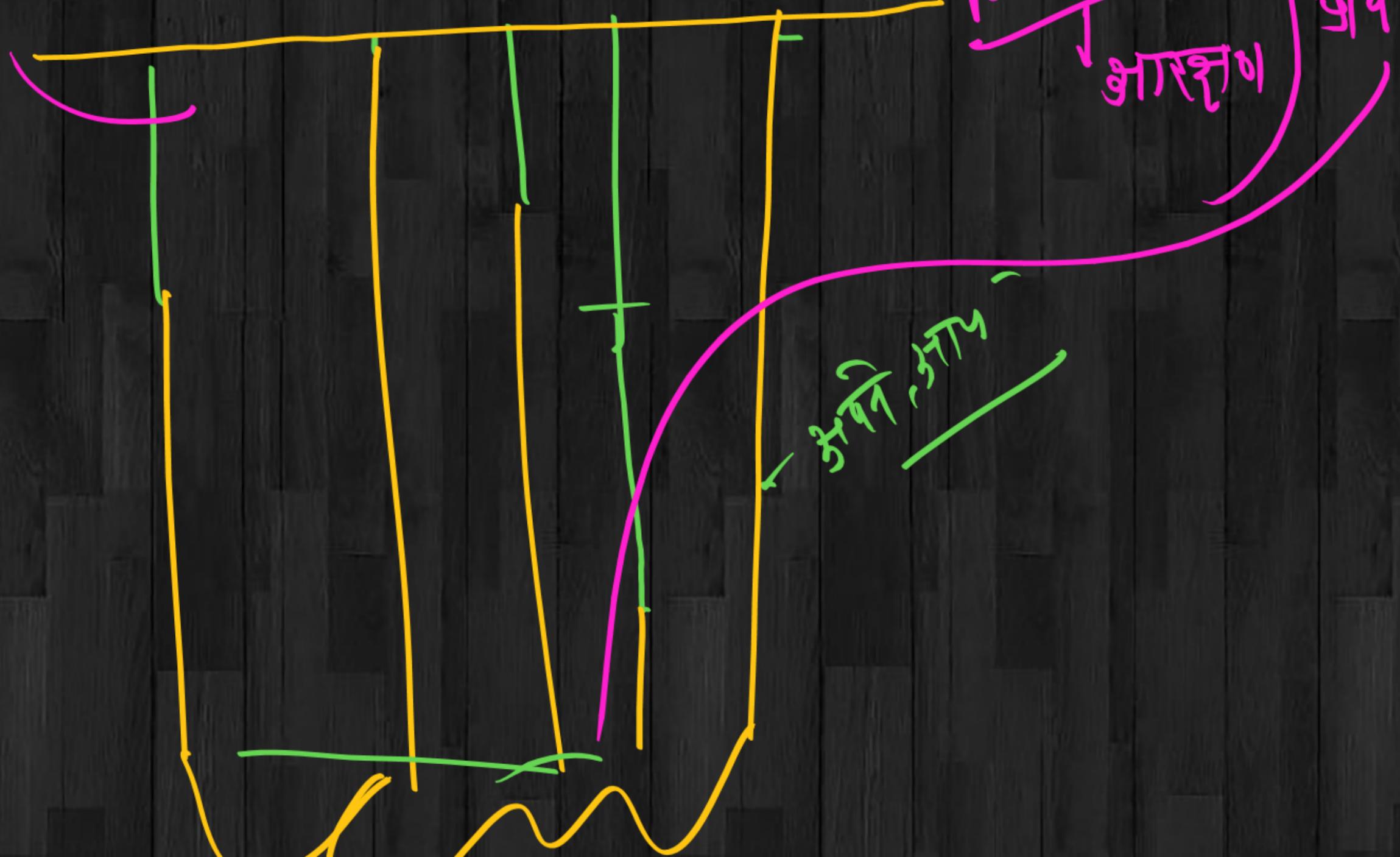
परिणाम

Provision

आरक्षण

प्रत्यक्ष

अंगीकरण



# Equal-व्यवहार

समान समाज = समान व्यवहार

॥  
समानता

Equal = Equal

⊗ Equality

असमान समाज में  
समान व्यवहार है

× समानता  
नहीं

Equal Society  
Equal Behavior

Equality



उत्तराखंड की एक शासकीय शाला में बच्चों को उनका मध्याह्न भोजन परोसा जा रहा है।

इस दिशा में सरकार द्वारा उठाया गया एक कदम है-मध्याह्न भोजन की व्यवस्था। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सभी सरकारी प्राथमिक स्कूलों के बच्चों को दोपहर का भोजन स्कूल द्वारा दिया जाता है। यह योजना भारत में सर्वप्रथम तमिलनाडु राज्य में प्रारंभ की गई और 2001 में उच्चतम न्यायालय ने सभी राज्य सरकारों को इसे अपने स्कूलों में छह माह के अंदर आरंभ करने के निर्देश दिए। इस कार्यक्रम के काफी सकारात्मक प्रभाव हुए। उदाहरण के लिए, दोपहर का भोजन मिलने के कारण गरीब बच्चों ने अधिक संख्या में स्कूल में प्रवेश लेना और नियमित रूप से स्कूल जाना शुरू कर

set up several schemes to improve the lives of communities and individuals who have been treated unequally for several centuries. These schemes are to ensure greater opportunity for people who have not had this in the past.

2001 - Mid day scheme

जयाना

५-११

दिया। शिक्षक बताते हैं कि पहले बच्चे खाना खाने घर जाते थे और फिर वापस स्कूल लौटते ही नहीं थे। परंतु अब, जब से स्कूल में मध्याह्न भोजन मिलने लगा है, उनकी उपस्थिति में सुधार आया है। वे माताएँ जिन्हें पहले अपना काम छोड़कर दोपहर को बच्चों को खाना खिलाने घर आना पड़ता था, अब उन्हें ऐसा नहीं करना पड़ता है। इस कार्यक्रम से जातिगत पूर्वाग्रहों को कम करने में भी सहायता मिली है, क्योंकि स्कूल में निम्न व उच्च जाति के बच्चे साथ-साथ भोजन करते हैं और कुछ स्थानों पर तो भोजन पकाने के लिए दलित महिलाओं को काम पर रखा गया है। मध्याह्न भोजन कार्यक्रम ने निर्धन विद्यार्थियों की भूख मिटाने में भी सहायता की है, जो प्रायः खाली पेट स्कूल आते हैं और इस कारण पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं।

One of the steps taken by the government includes the midday meal scheme. This refers to the programme introduced in all government elementary schools to provide children with cooked lunch. Tamil Nadu was the first state in India to introduce this scheme, and in 2001, the Supreme Court asked all state governments to begin this programme in their schools within six months. This programme has had many positive effects. These include the fact that more poor children have begun enrolling and regularly attending school. Teachers reported that earlier children would often go home for lunch and then not return to school but now with the midday meal being provided in school, their attendance has improved. Their mothers, who earlier had to interrupt

यद्यपि शासकीय कार्यक्रम, अवसरों की समानता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, किंतु अभी-भी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। मध्याह्न भोजन कार्यक्रम ने निर्धन बच्चों का स्कूलों में प्रवेश और उनकी उपस्थिति तो बढ़ा दी है, लेकिन फिर भी इस देश में वे स्कूल जहाँ अमीरों के बच्चे जाते हैं, उन स्कूलों से बहुत अलग हैं जहाँ

their work to feed their children at home during the day, now no longer need to do so. This programme has also helped reduce caste prejudices because both lower and upper caste children in the school eat this meal together, and in quite a few places, *Dalit* women have been employed to cook the meal. The midday meal programme also helps reduce the hunger of poor students who often come to school and cannot concentrate because their stomachs are empty.



मध्याह्न भोजन कार्यक्रम क्या है? क्या आप इस कार्यक्रम के तीन लाभ बता सकते हैं? आपके विचार से यह कार्यक्रम किस प्रकार समानता की भावना बढ़ा सकता है?

What is the midday meal programme? Can you list three benefits of the programme? How do you think this programme might help promote greater equality?

Qnaing  
मुख्य परीक्षा

अपने क्षेत्र में लागू की गई किसी एक सरकारी योजना के बारे में पता लगाइए। इस योजना में क्या किया जाता है? यह किस के लाभ के लिए बनाई गई है?

Find out about one government scheme in your area. What does this scheme do? Whom is this scheme set up to benefit?

Qnaing

That  
why  
✓ How  
✓ Do what

“अपने आत्मसम्मान को दौंव पर लगा कर जीवित रहना अशोभनीय है। आत्मसम्मान जीवन का सबसे जरूरी हिस्सा है। इसके बिना व्यक्ति नगण्य है। आत्मसम्मान के साथ जीवन बिताने के लिए व्यक्ति को कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करनी होती है। केवल कठिन और निरंतर संघर्ष से ही व्यक्ति बल, विश्वास और मान्यता प्राप्त कर सकता है।”

“मनुष्य नाशवान है। हर व्यक्ति को किसी-न-किसी दिन मरना है, परंतु व्यक्ति को यह संकल्प लेना चाहिए कि वह अपने जीवन का बलिदान, आत्मसम्मान के उच्च आदर्शों को विकसित करने और अपने मानव जीवन को बेहतर बनाने में करेगा। किसी साहसी व्यक्ति के लिए आत्मसम्मान रहित जीवन जीने से अधिक अशोभनीय और कुछ नहीं है।”

*D. D. B. D. Ambedkar*

*“It is disgraceful to live at the cost of one's self-respect. Self-respect is the most vital factor in life. Without it, man is a cipher. To live worthily with self-respect, one has to overcome difficulties. It is out of hard and ceaseless struggle alone that one derives strength, confidence and recognition.”*

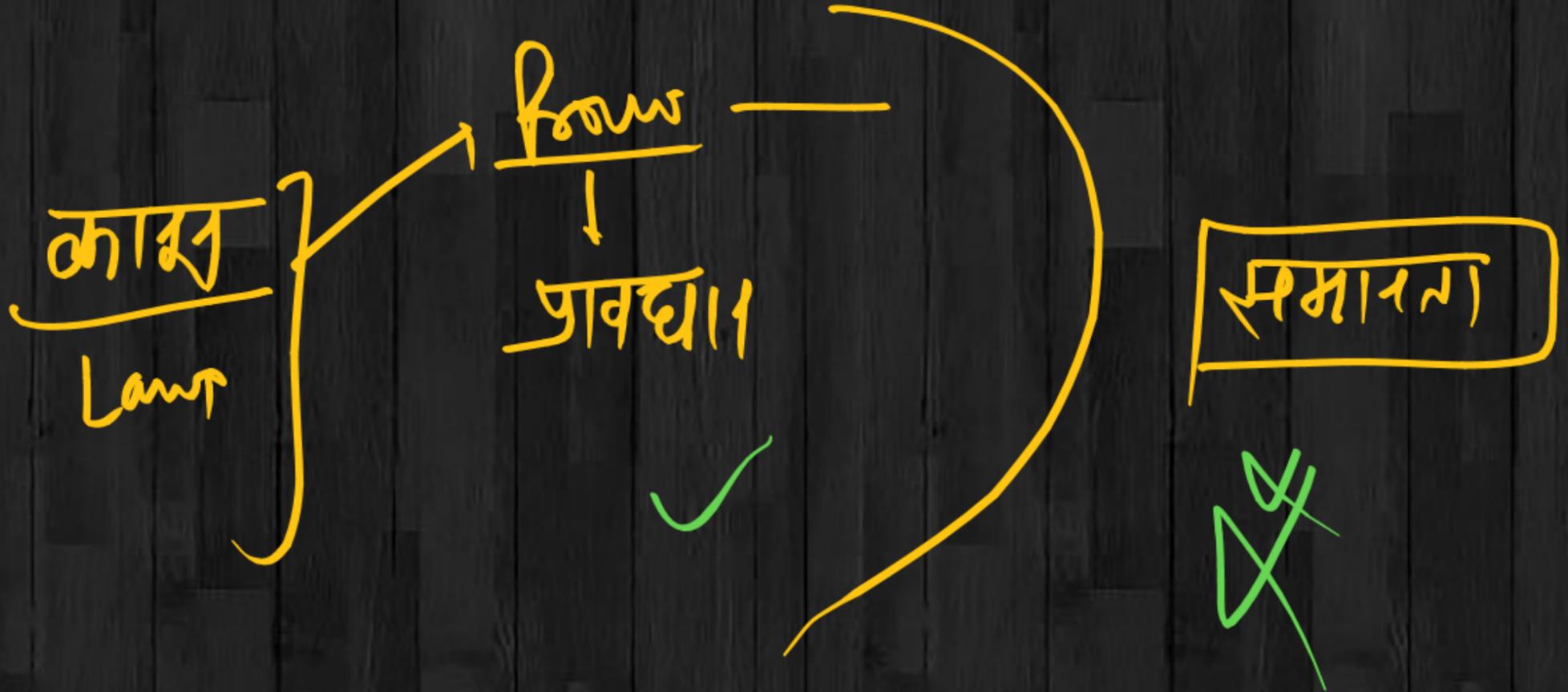
*“Man is mortal. Everyone has to die some day or the other. But one must resolve to lay down one's life in enriching the noble ideals of self-respect and in bettering one's human life... Nothing is more disgraceful for a brave man than to live life devoid of self-respect.”*

*- B.R. Ambedkar*

गरीबों के बच्चे पढ़ते हैं। आज भी देश में कई स्कूल हैं जिनमें ओमप्रकाश वाल्मीकि जैसे दलित बच्चों के साथ भेदभाव और असमानता का व्यवहार किया जाता है। इन बच्चों को ऐसी असमान स्थितियों में ढकेला जाता है, जहाँ उनके सम्मान की रक्षा नहीं हो पाती है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि कानून बन जाने के बाद भी लोग उन्हें समान समझने से इंकार कर देते हैं।

Law

While government programmes play an important role in increasing equality of opportunity, there is much that still needs to be done. While the midday meal programme has helped increase the enrolment and attendance of poor children in school, there continues to be big differences in our country between schools that the rich attend and those that the poor attend. Even today there are several schools in the country in which *Dalit* children, like Omprakash Valmiki, are discriminated against and treated unequally. These children are forced into unequal situations in which their dignity is not



इसका मुख्य कारण यह है कि दृष्टिकोण में बहुत धीरे-धीरे परिवर्तन आता है। यद्यपि लोग यह जानते हैं कि भेदभाव का व्यवहार कानून के विरुद्ध है, फिर भी वे जाति, धर्म, अपंगता, आर्थिक स्थिति और महिला होने के आधार पर लोगों से असमानता का व्यवहार करते हैं। वर्तमान दृष्टिकोण को बदलना तभी संभव है, जब लोग यह विश्वास करने लगें कि कोई भी कमतर नहीं है और हर व्यक्ति सम्मानजनक व्यवहार का अधिकारी है। प्रजातंत्रीय समाज में समानता स्थापित करना एक सतत संघर्ष है, जिसमें व्यक्तियों और विभिन्न समाजों को सहयोग देना है। इस पुस्तक में आप इसके बारे में और अधिक पढ़ेंगे।

respected. This is because people refuse to think of them as equal even though the law requires it.

One of the main reasons for this is that attitudes change very slowly. Even though persons are aware that discrimination is against the law they continue to treat people unequally on the basis of their caste, religion, disability, economic status and because they are women. It is only when people begin to believe that no one is inferior, and that every person deserves to be treated with dignity, that present attitudes can change. Establishing equality in a democratic society is a continuous struggle and one in which individuals as well as various communities in India contribute to and you will read more about this in this book.

## अन्य लोकतंत्रों में समानता के मुद्दे

*OKHND*

शायद आप सोच रहे होंगे कि क्या भारतीय लोकतंत्र ही ऐसा है जहाँ असमानता का अस्तित्व है और जहाँ समानता के लिए संघर्ष जारी है। सच तो यह है कि संसार के अधिकांश लोकतंत्राय देशों में, समानता के मुद्दे पर विशेष रूप से संघर्ष हो रहे हैं। उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में अफ्रीकी-अमेरिकन लोग, जिनके पूर्वज गुलाम थे और अफ्रीका से लाए गए थे, वे आज भी अपने जीवन को मुख्य रूप से असमान बताते हैं। जबकि 1950 के अंतिम दशक में अफ्रीकी-अमेरिकनों को समान अधिकार दिलाने के लिए आंदोलन हुआ था। इससे पहले अफ्रीकी-अमेरिकनों के साथ संयुक्त राज्य में बहुत असमानता का व्यवहार होता था और कानून भी उन्हें समान नहीं मानता था। उदाहरण के लिए बस से यात्रा करते समय उन्हें बस में पीछे बैठना पड़ता था या जब भी कोई गोरा आदमी बैठना चाहे, उन्हें अपनी सीट से उठ जाना पड़ता था।

## Issues of equality in other democracies

You are probably wondering whether India is the only democratic country in which there is inequality and where the struggle for equality continues to exist. The truth is that in many democratic countries around the world, the issue of equality continues to be the key issue around which communities struggle. So, for example, in the United States of America, the African-Americans whose ancestors were the slaves who were brought over from Africa, continue to describe their lives today as largely unequal. This, despite the fact that there was a movement in the late 1950s to push for equal rights for African-Americans. Prior to this, African-Americans were treated extremely unequally in the United States and denied equality through law. For example, when travelling by bus, they either had to sit at the back of the bus or get up from their seat whenever a white person wished to sit.

रोज़ा पार्क्स, एक अफ्रीकी-अमेरिकन औरत,  
जिनकी एक विद्रोही प्रतिक्रिया ने अमेरिकी इतिहास  
की दिशा बदल दी।

*Rosa Parks, an African-  
American woman, changed  
the course of American  
history with one defiant act.*



रोज़ा पार्क्स (1913-2005) एक अफ्रीकी-अमेरिकन महिला थीं। 1 दिसंबर 1955 को दिन भर काम करके थक जाने के बाद बस में उन्होंने अपनी सीट एक गोरे व्यक्ति को देने से मना कर दिया। उस दिन उनके इंकार से अफ्रीकी-अमेरिकनों के साथ असमानता को लेकर एक विशाल आंदोलन प्रारंभ हो गया, जो नागरिक अधिकार आंदोलन (सिविल राइट्स मूवमेंट) कहलाया। 1964 के नागरिक अधिकार अधिनियम ने नस्ल, धर्म और राष्ट्रीय मूल के आधार पर भेदभाव को निषेध कर दिया। इसने यह भी कहा कि अफ्रीकी-अमेरिकन बच्चों के लिए सब स्कूलों के दरवाजे खोले जाएंगे और उन्हें उन

Rosa Parks (1913-2005) was an African-American woman. Tired from a long day at work she refused to give up her seat on a bus to a white man on 1 December 1955. Her refusal that day started a huge agitation against the unequal ways in which African-Americans were treated and which came to be known as the **Civil Rights Movement**. The Civil Rights Act of 1964 prohibited discrimination on the basis of race, religion or national origin. It also stated that all schools would be open to African-American children and that they would no longer have to attend

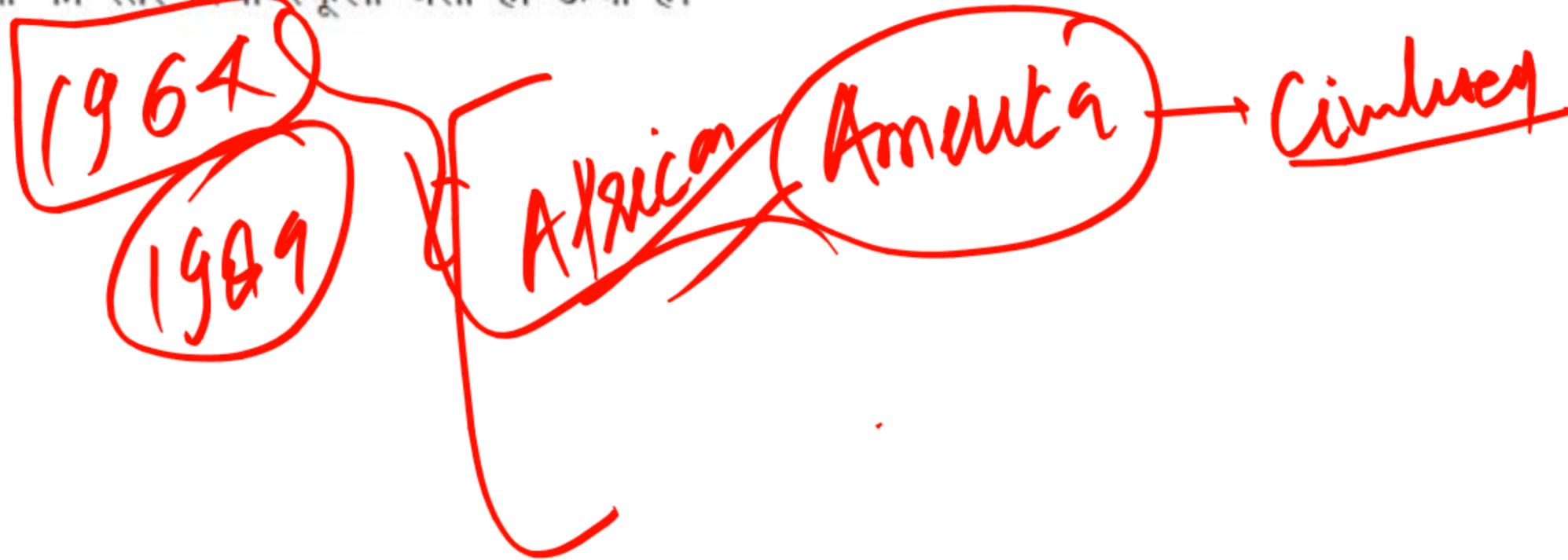
X

1964

Civil Right Movement 1950

अलग स्कूलों में नहीं जाना पड़ेगा, जो विशेष रूप से केवल उन्हीं के लिए खोले गए थे। इतना होने के बावजूद भी अधिकांश अफ्रीकी-अमेरिकन गरीब हैं। अधिकतर अफ्रीकी-अमेरिकन बच्चे केवल ऐसे सरकारी स्कूलों में प्रवेश लेने की ही सामर्थ्य रखते हैं, जहाँ कम सुविधाएँ हैं और कम योग्यता वाले शिक्षक हैं; जबकि गोरे विद्यार्थी निजी स्कूलों में जाते हैं या उन क्षेत्रों में रहते हैं, जहाँ के सरकारी स्कूलों का स्तर निजी स्कूलों जैसा ही ऊँचा है।

separate schools specially set up for them. However, despite this, a majority of African-Americans continue to be among the poorest in the country. Most African-American children can only afford to attend government schools that have fewer facilities and poorly qualified teachers as compared to white students who either go to private schools or live in areas where the government schools are as highly rated as private schools.



## भारत के संविधान के अनुच्छेद 15 के अंश

15

धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध-

(1) राज्य, किसी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्मस्थान या इनमें से किसी के आधार पर कोई विभेद नहीं करेगा।

(2) कोई नागरिक केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्मस्थान या इनमें से किसी के आधार पर

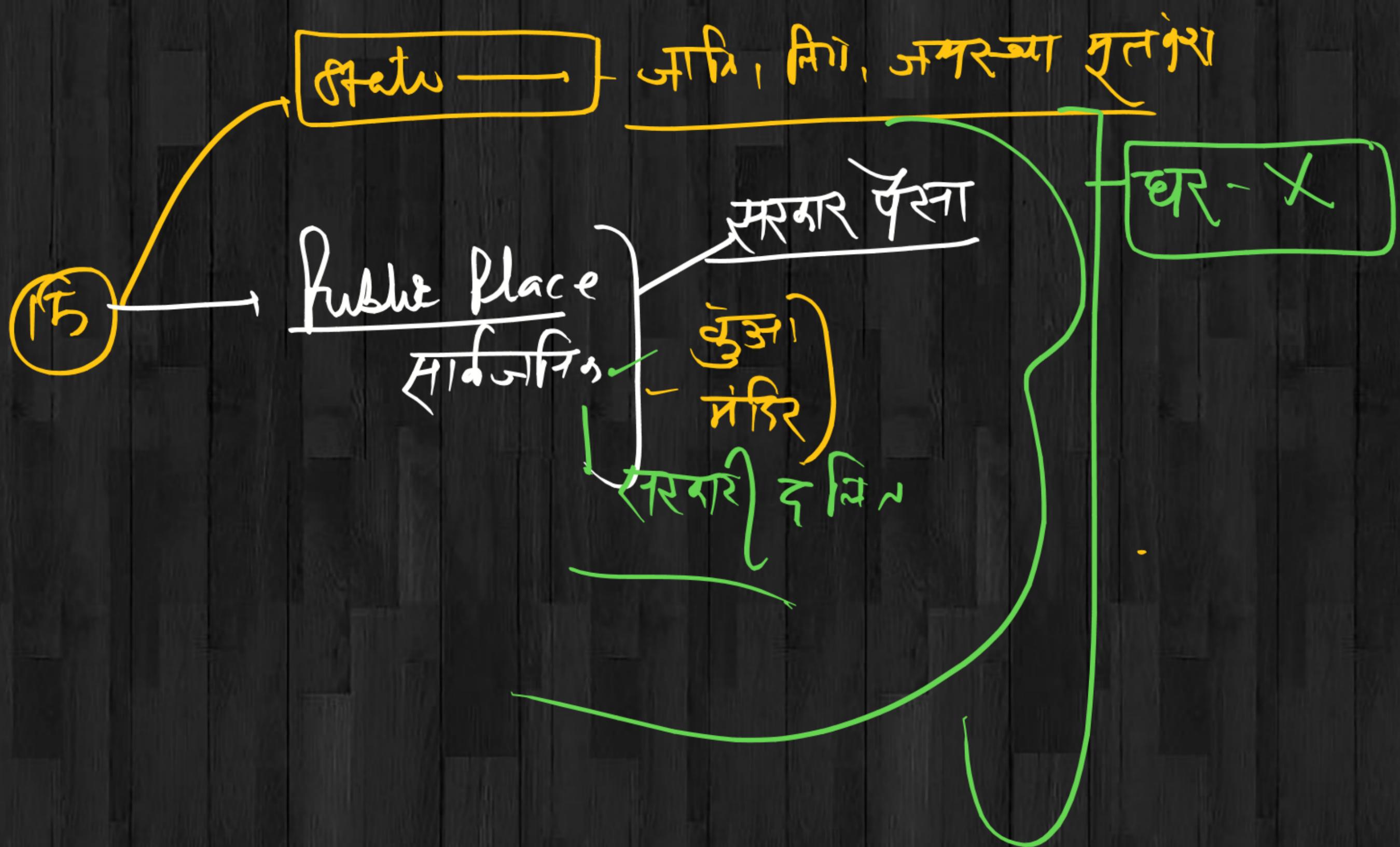
(क) दुकानों, सार्वजनिक भोजनालयों, होटलों और सार्वजनिक मनोरंजन के स्थानों में प्रवेश

या

(ख) पूर्णतः या भागतः राज्य-निधि से पोषित या साधारण जनता के प्रयोग के लिए समर्पित कुँओं,

तालाबों, स्नानघाटों, सड़कों और सार्वजनिक समागम के स्थानों के उपयोग,

के संबंध में किसी भी नियोग्यता, दायित्व, निर्बंधन या शर्त के अधीन नहीं होगा।



## Excerpt from Article 15 of the Indian Constitution

Prohibition of discrimination on grounds of religion, race, caste, sex or place of birth.

(1) The State shall not discriminate against any citizen on grounds only of religion, race, caste, sex, place of birth or any of them.

(2) No citizen shall, on grounds only of religion, race, caste, sex, place of birth or any of them, be subject to any disability, liability, restriction or condition with regard to –

(a) access to shops, public restaurants, hotels and places of public entertainment;

or

(b) the use of wells, tanks, bathing ghats, roads and places of public resort maintained wholly or partly out of State funds or dedicated to the use of the general public.

## लोकतंत्र की चुनौती

किसी भी देश को पूरी तरह से लोकतंत्रीय नहीं कहा जा सकता। हमेशा से ही ऐसे समुदाय और व्यक्ति होते हैं, जो लोकतंत्र को नए अर्थ देते हैं और अधिक से अधिक समानता लाने के लिए नए-नए सवाल उठाते हैं। इसके केंद्र में वह संघर्ष है, जो सब व्यक्तियों को समानता और सम्मान दिलाने का पक्षधर है। इस पुस्तक में आप पढ़ेंगे कि किस तरह समानता का प्रश्न भारतीय लोकतंत्र में हमारे दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। इन पाठों को पढ़ते हुए विचार कीजिए कि क्या सब व्यक्तियों की समानता और उनके आत्मसम्मान को ऊँचा रखने की भावना को लोग स्वीकार कर रहे हैं या नहीं।

## Challenge of democracy

No country can be described as being completely democratic. There are always communities and individuals trying to expand the idea of democracy and push for a greater recognition of equality on existing as well as new issues. Central to this is the struggle for the recognition of all persons as equal and for their dignity to be maintained. In this book you will read about how this issue of equality affects various aspects of our daily lives in democratic India. As you read these chapters, think about whether the equality of all persons and their being able to maintain their dignity is upheld.

## अभ्यास

1. लोकतंत्र में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार क्यों महत्वपूर्ण है? ✓
2. बॉक्स में दिए गए संविधान के अनुच्छेद 15 के अंश को पुनः पढ़िए और दो ऐसे तरीके बताइए, जिनसे यह अनुच्छेद असमानता को दूर करता है?
3. ओमप्रकाश वाल्मीकि का अनुभव, अंसारी दंपति के अनुभव से किस प्रकार मिलता था?

## EXERCISES

1. In a democracy why is universal adult franchise important?
2. Re-read the box on Article 15 and state two ways in which this Article addresses inequality?
3. In what ways was Omprakash Valmiki's experience similar to that of the Ansaris? ✓ ✓



<http://disabilityaffairs.gov.in>

सरकार

Govt जनता की सरकार

Govt

Uniform Admin

All People



To

4. "कानून के सामने सब व्यक्ति बराबर हैं" - इस कथन से आप क्या समझते हैं? आपके विचार से यह लोकतंत्र में महत्वपूर्ण क्यों है?

5. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016, के अनुसार उनको समान अधिकार प्राप्त हैं और समाज में उनकी पूरी भागीदारी संभव बनाना सरकार का दायित्व है। सरकार को उन्हें निःशुल्क शिक्षा देनी है और विकलांग बच्चों को स्कूलों की मुख्यधारा में सम्मिलित करना है। कानून यह भी कहता है कि सभी सार्वजनिक स्थल, जैसे- भवन, स्कूल आदि में ढलान बनाए जाने चाहिए, जिससे वहाँ विकलांगों के लिए पहुँचना सरल हो।

कानून Law

4. What do you understand by the term "all persons are equal before the law"? Why do you think it is important in a democracy?

5. According to the Rights of Persons with Disabilities Act, 2016, persons with disabilities have equal rights, and that the government should make possible their full participation in society. The government has to provide free education and integrate children with disabilities into mainstream schools. This law also states that all public places including buildings, schools, etc., should be accessible and provided with ramps.

चित्र को देखिए और उस बच्चे के बारे में सोचिए, जिसे सीढ़ियों से नीचे लाया जा रहा है। क्या आपको लगता है कि इस स्थिति में उपर्युक्त कानून लागू किया जा रहा है? वह भवन में आसानी से आ-जा सके, उसके लिए क्या करना आवश्यक है? उसे उठाकर सीढ़ियों से उतारा जाना, उसके सम्मान और उसकी सुरक्षा को कैसे प्रभावित करता है?

Look at the photograph and think about the boy who is being carried down the stairs. Do you think the above law is being implemented in his case? What needs to be done to make the building more accessible for him? How would his being carried down the stairs affect his dignity as well as his safety?



## शब्द-संकलन

**सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार**- यह लोकतंत्रीय समाज का अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। इसका अर्थ है कि सभी वयस्क (18 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के) नागरिकों को वोट देने का अधिकार है चाहे उनकी सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो।

**गरिमा**- इसका तात्पर्य अपने-आपको और दूसरे व्यक्तियों को सम्मान योग्य समझने से है।

**संविधान**- यह वह दस्तावेज़ है जिसमें देश की जनता व सरकार द्वारा पालन किए जाने वाले नियमों और अधिनियमों को निरूपित किया गया है।

**नागरिक अधिकार आंदोलन**- एक आंदोलन, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में 1950 के दशक के अंत में प्रारंभ हुआ और जिसमें अफ्रिकी-अमेरिकन लोगों ने नस्लगत भेदभाव को समाप्त करने और समान अधिकारों की माँग की।

## Glossary

**Universal adult franchise:** This is a very important aspect of democratic societies. It means that all adult (those who are 18 and above) citizens have the right to vote irrespective of their social or economic backgrounds.

**Dignity:** This refers to thinking of oneself and other persons as worthy of respect.

**Constitution:** This is a document that lays down the basic rules and regulations for people and the government in the country to follow.

**Civil Rights Movement:** A movement that began in USA in 1950s in which African-American people demanded equal rights and an end to racial discrimination.

Equality समानता - मतलब

समानता का संविधान में प्रावधान

Provision of Equality in Constitution

# धर्मवाद

समाज में समानता है